संयुक्त परिवार - बदलता परिदृश्य

* डॉ0 निरूपमा सिंह

भारतीय समाज में प्राचीन काल से संयुक्त परिवार एक ऐसी संस्था है जिसमें विभिन्न स्तर के व्यक्तियों का समुदाय न केवल एक साथ रहता है, वरन् वह दूसरे के साथ आत्मीयता के सूत्र में बँध कर अपने–अपने कर्तव्यों और अधिकारों की आचार–संहिता का भी परिपालन करता है। संयुक्त परिवार में सदस्यों के पारस्परिक प्रेम और सहयोग तथा उनके पारस्परिक त्याग और बलिदान की भावना पर ही परिवार के सदस्यो की उन्नति निर्भर करती है। संयुक्त परिवार में मुखिया परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखता है, यदि कोई सदस्य व्यसनी, स्वार्थी अथवा संकीर्ण मनोवृत्ति का हो गया हो तो उसे प्यार या फिर सख्ती से समझा–बुझाकर सही रास्ते लाने में मुखिया अपने सारे अनुभव का उपयोग करता है। फलस्वरूप वह पारिवारिक सदस्य, समाज के लिए कठिनाई नही उत्पन्न कर पाता। संयुक्त परिवार एक पवित्र संस्था है जो सभी छोटे–बड़े सदस्यों के हितों को ध्यान में रखते हुए, समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

समाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य सामाजिक प्रक्रिया है जो समस्त विश्व में व्याप्त है। भारत भी नवीन परिवर्तनों से अछूता नही है भारतीय समाज में भी औद्योगीकरण, शिक्षा के प्रसार, शहरीकरण, नवीन प्रौद्यौगीकरण, जनसंचार के साधनों में वृद्वि, भूमि सुधार आदि के कारण व्यापक परिवर्तन हो रहा है। सामजिक परिवर्तन के कारण भारतीय संयुक्त परिवार में भी परिवर्तन आये है। संयुक्त परिवारों की दशा इन दिनों बड़ी ही दयनीय हो गई है वे शनैः–शनैः बिखरते और क्षीण होते जा रहे है। ये विखण्डन सामाजिक परिवर्तन के चक्र का एक चरण है– आदिम युग में इन्सान अकेले रहता था फिर उसने झुंड में रहना सीखा इंसान उसके अगले चरण में उसने परिवार बनाया और जब कृषि कार्यों मे उसे श्रम शक्ति की आवश्यकता प्रतीत हुई तभी संयुक्त परिवार का उदय हुआ।

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, डी0ए0वी0पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

अब आज कल अनेक कारकों जैसे–तकनीकी विकास, शिक्षा के प्रसार, संचार साधनों इत्यादि की उपलब्धता के कारण संयुक्त परिवार विखण्डित होकर मूल परिवार में बदल रहे हैं। यही मूल परिवार कालांतर में संयुक्त परिवार में बदल जाते हैं। यह सत्य है की आज के संयुक्त परिवार में वे मूल्य नहीं पाये जाते जो प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रतीक थे। आज पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव में आकर संयुक्त परिवार मे छल, ईर्ष्या–द्वेष तथा पारस्परिक भेदभाव की भावना बढ़ी है।

यद्यपि संयुक्त परिवार प्रथा हर दृष्टि से उचित और लाभदायक हैं किन्तु कुछ कारणों की वजह से इस प्रथा का ह्रास होता जा रहा है जैसे– भारत में प्राचीन काल मे कृषि की प्रधानता थी। जजमानी प्रथा का समाज मे प्रचलन था, किसी भी सेवा के बदले अनाज दिया जाता तथा किसी भी आवश्यकता की वस्तुओं का आदान–प्रदान भी अनाज के माध्यम से ही होता था। ब्रिटिश काल में जब नवीन नौकरियों का सृजन किया गया तो मुद्रा का प्रचलन बढ़ने लगा तब शिक्षित लोगो ने संयुक्त परिवार से बाहर जाकर सुदूर क्षेत्रों में नौकरियों की तलाश शुरू कर दी परन्तु वे तब भी भावनात्मक रूप से अपने परिवार से जुड़े रहे । शिक्षा का बढ़ता प्रसार, जनसंचार क्रान्ति और पाश्चात्य मूल्यों के प्रभाव में धर्म के बंधन ढीले हो रहे हैं। अब व्यक्ति धार्मिक नियमानुसार अच्छे–बुरे कर्मों का आकलन नही करता बल्कि व्यक्तिगत खुशी के आधार पर गलत और सही कार्यो का निर्धारण कर रहा है एवं अपने जीवन को यथार्थ के अनुसार व्यतीत कर रहा है जिससे संयुक्त परिवार का अपने सदस्यों पर नियन्त्रण हट रहा है। इसी प्रकार मुद्रा के बढ़ते प्रचलन ने जजमानी प्रथा को भी नुकसान पहुँचाया जिससे विभिन्न सेवा क्षेत्रों में लगे लोगों को भी अपने क्षेत्रों से पलायन करना पड़ा जिसका प्रभाव संयुक्त परिवार की अखण्डता पर पड़ा।

ब्रिटिश काल के दौरान जब भारत में भूमि सुधार नियमों के द्वारा जमींदारी प्रथा को खत्म कर दिया गया और प्रत्येक किसान के पास भूमि धारण करने की सीमा निश्चित कर दी गई जिसके फलस्वरूप अधिकतर

संयुक्त परिवारों के मुखियों ने जिनके पास बड़ी संयुक्त भूमि थी उसे उन्होंने अपने परिवार के अन्य सदस्यों के नाम कर दी जिसके परिणामस्वरूप सदस्यों में व्यक्तिवाद की भावना पनपने लगी और कलांतर में वे अपनी–अपनी भूमि के बल पर परिवार से पृथक होते गये जिससे संयुक्त परिवार में विखण्डन शुरू हो गया आधुनिक काल में जजमानी प्रथा के खत्म होने तथा नवीन उद्योगों जैसे मिल, कारखाने खुलने से प्राचीन व्यवसायों पर प्रभाव पड़ा।जो सेवा करने वाली जातियाँ थी वे जब इन मिल कारखानों मे कार्य कर के अधिक धन व सम्मान प्राप्त करने लगीं तो अपने गाँव से अपने परिवारों को भी शहर में बुलाने लगी और अपने पुश्तैनी धन्धो को छोड़कर जीविकोपार्जन के लिए नवीन क्षेत्रों मे जाकर बसने लगी जिसके फलस्वरूप इनके संयुक्त परिवारों मे भी विखण्डन शुरू हो गया।

भारत में हुई सूचना क्रांति ने भी संयुक्त परिवार के विघटन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है –जनसंचार के बढ़ते उपभोग ने भारतीय संस्कृति के मूल्यों की नींव को हिला दिया है पहले संयुक्त परिवारों में परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर अपने सुख–दुख आपस में बांट लेते थे। अब अगर किसी के पास समय है भी तो वह या तो टेलीविज़न या फिर मोबाइल पर ही व्यस्त रहता है। आपसी संवाद बहुत कम होता है जिसका प्रभाव सम्बन्धों पर पड़ता है। मीडिया की चमक–दमक से प्रभावित व्यक्ति अधिक से अधिक धर्नाजन कर सबसें अमीर व्यक्ति बन जाना चाहता है जिसके लिए यदि उसे अपने परिवारिक सदस्यों को भी छोड़ना पड़े तो भी पीछे नहीं हटता, परिणाम–स्वरूप संयुक्त परिवारों में विघटन बढ़ता जा रहा हैं। विभिन्न वर्गों में स्त्रियों की बढ़ती हुई शैक्षिक स्थिति के कारण उनमें आत्मनिर्भरता आयी है आज महिलायें अपने कार्य–कौशल के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में निपुणता के साथ कार्य का संपादन कर रही हैं स्त्रीयाँ अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हो गयी है जिस वजह से वे अपने सास–ससुर तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अच्छे सम्बन्ध तो रख रही हैं परन्तु उनके द्वारा बनायें गये किन्ही नियम–आडम्बरों का बिना सोचे

समझे अनुसरण करने को तैयार नही होंगी परिणामस्वरूप परिवारिक एकता में परिवर्तन हो रहा है।

आधुनिक भारत में औद्योगीकरण के विकास के फलस्वरूप जो परिणामी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई। उसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों से लोग औद्योगिक क्षेत्रों की ओर पलायन कर संग्रहीत हो गयें। जिसके कारण औद्योगिक क्षेत्रो में विशिष्ट परिवारिक संरचनाएँ उत्पन्न हुई। जैसे–कि गॉव से जब एक व्यक्ति नगर में हुए औद्योगिक विकास में अपने श्रमदान के लिए गया तो उसे वहाँ अपने ग्रामीण जीवन की अपेक्षा अच्छा जीवकोपार्जन मिला फलस्वरूप श्रमशक्ति की पूर्ति हेतु अगली बार वह अपने बन्धु–नातेदार तथा गाँव के लोगों को भी साथ ले गया। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्रों ने विशिष्ट प्रकार के संयुक्त परिवारों का सृजन किया जिसके सदस्य स्वेच्छा से परिवारिक संबधों का पालन करते हैं और वे किसी प्रकार के परिवारिक नियमों में अपने को आबद्ध नहीं मानते हैं और आजकल पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव में आकर एकाँकी परिवारों को हम विशेष महत्व देने लगे हैं जिससे परिवार में छल, छद्म ईर्ष्या–द्वेष तथा पारस्परिक भेदभाव की भावना बढ़ी है परिणाम स्वरूप सामाजिक मूल्यों का ह्रास हुआ हैं जिससे परिवार की आधारभूत भावनाओं को क्षति पहुँची है और परिवार की एकता, अखण्डता एवं समरसता प्रभावित हुई है।

आधुनिकीकरण के द्वारा व्यक्ति के साथ ही समाज एवं उसकी प्रत्येक इकाई विकासशील प्रक्रिया से गुजरती है और इस परिवर्तन के दौरान कई बार विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं परिणाम स्वरूप समाज को उससे उत्पन्न होने वाले संकट से जूझना पड़ता है। आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप संयुक्त परिवार अपना मूलरूप खोते जा रहे हैं आज के आधुनिक समय में व्यक्ति परिवार से ऊपर स्वयं की इच्छाओं और आवश्यकताओं को रखता है फलस्वरूप वह संयुक्त परिवार के दबाव में नहीं रहना चाहता परन्तु जब उसको अपनी आवश्यकताओं चाहे वो स्वास्थ्य से सम्बन्धित हो, व्यवसाय से अथवा आर्थिक कारणों से, परिवार की जरूरत

महसूस होती है तो वह स्वयं को नितांत अकेला पाता है। आधुनिकीकरण के तहत लोगों में अपने हितों की पूर्ति के लिए दूसरो के हितों को नज़रअंदाज करने की प्रवृत्ति बढ़ी है जिसकी वजह से भारतीय समाज में व्यक्तिवादिता का स्तर खतरनाक स्थिति में पहुँच गया। आजकल महानगरों में, माता–पिता दोनो धनार्जन करने में व्यस्त रहते है इसके लिए उन्हें अपने छोटे बच्चों से भी दूर रहना पड़ता है। वे उन्हे पूर्ण समय नहीं दे पाते परिणामस्वरूप बच्चे किसी आया या पालनाघर में अपने जीवन के महत्वपूर्ण समय, जिसमें की उनके संस्कार, मूल्य एवं भविष्य की मजबूत बुनियाद तैयार होनी है, में व्यतीत करते है। जो उनके व्यक्तित्व में एक अपूर्णता का बोध सदैव कराता रहता है। जब बच्चा बड़ा होता है तो उसे समाज से सामंजस्य और सम्बन्धों के महत्व से लगाव नही होता जिसका परिणाम परिवारिक सबंधो पर भी पड़ता है। परिणामस्वरूप वहाँ भी सम्बन्धो मे लगाव न होने से विघटन हो जाता है। वर्तमान में कई पीढ़ी के रक्त सम्बन्धी एक साथ नहीं रह पाते। जिसका प्रमुख कारण है बढती व्यक्तिवादिता धनार्जन की अधिक से अधिक लोलुपता और स्वच्छंदता। आज प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वयं का परिवार निर्मित करना चाहता है जिसमें वह स्वयं उसकी पत्नी और एक या दो बच्चों तक ही सीमित रहना चाहते हैं। ऐसे में परिवार का जो भी सदस्य अधिक धनार्जन करता है वो चाहे पद में छोटा ही क्यो न हो उसे ही ज्यादा मान सम्मान दिया जाता है अर्जित प्रस्थिति के द्वारा वह समाज में जो प्रभाव रखता है उसी के आधार पर घर में उसकों प्रभुत्व प्रदान किया जाता है। वर्तमान पारिवारिक रूप जो आज के समाज में सामने है उसमें धर्म का नियंत्रण काफी शिथिल हो गया है व्यक्ति आज भी पूजा पाठ़ करता तो है परन्तु वह केवल धार्मिक भावना से प्रेरित होकर नही बल्कि उसके पीछे भी उसकी अपनी कहीं न कहीं अर्थ और समृद्वि की भावना प्रबल रूप सें दिखाई देती है। अतः आज सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम धर्म के अनुसार न होकर, दिखावा मात्र रह गये है। धर्मनिरपेक्षता बढ़ रही है, व्यक्ति धर्म के अनुसार न चलकर अर्थ की ओर अधिक आकर्षित हो रहा है चाहे वह किसी

भी विधि से प्राप्त किया गया हो। परिवार के स्थायित्व में निरंतर गिरावट आ रही है आज ईर्ष्या, स्वार्थपरकता एवं व्यक्तिगत श्रेष्ठता की भावनाओं ने परिवार के त्याग स्नेह संरक्षणात्मक बंधनों को नष्ट कर दिया है और व्यक्ति अपने लाभ के लिए अपने भाई अथवा बहन को भी नुकसान पहुँचाने में नहीं झिझक रहा है फलस्वरूप जो भारतीय समाज की रीढ़ (परिवार संस्था) थी उसमें विघटन होने के कारण उसकी प्रकृति अस्थाई होती जा रही है।

वर्तमान परिवारों के आत्मीय संबध क्षीण होने के कारण संतानों को पर्याप्त भावनात्मक लगाव प्राप्त नही होता, पारिवारिक सदस्यों में आत्मीय सम्बन्ध अर्थ सम्बन्धों के भार तले दब गये हैं। ऐसे में एक नवयुवक जो आयु परिवर्तन के दौर से गुजर रहा होता है उसको अगर भावनात्मक लगाव अपने परिवार से नहीं प्राप्त हो पाता तो वह कभी–कभी गलत दिशा की ओर बढ़ जाता है जो कि किसी भी राष्ट्र अथवा परिवार के लिए सदैव नुकसान देय ही होता है। प्राचीन समय में विवाह सम्बन्ध परिवार के मुखिया द्वारा निर्धारित होते थे जिसके आधार पर ही संतान को विवाह बंधन में बंधना होता था। परन्तु आज विवाह का निर्धारण संतान स्वयं ही अपनी इच्छानुसार कर रही है अब विवाह के धार्मिक बंधन वाले रूप में भी परिवर्तन दिखाई पड़ रहा हैं जिसके परिणाम स्वरूप परिवारों में विवाह–विच्छेद की संख्या में वृद्वि देखने कों मिलती है आज के समय में विवाह को दो परिवारों का बंधन न मानकर बल्कि एक समझौते के रूप में लिया जाने लगा है। साथ ही वर्तमान भारतीय परिवारों में कानून का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है। आज के समय में राज्य ने शिक्षा, रहन–सहन, विवाह की आयु, विवाह विच्छेद जैसे तमाम कानून बनाकर पारम्परिक भारतीय पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है। परिवार सुरक्षा की जिम्मेदारी अब राज्य तथा विभिन्न विभागों पर आ गयी है। आज यदि कोई दुर्घटना घटित हो जाए तो विभिन्न सामाजिक उपक्रमों द्वारा बीमा इत्यादि के द्वारा क्षतिपूर्ति की जाती है जबकि पारम्परिक भारतीय समाज के किसी भी सदस्य के साथ कोई अनहोनी घटित होने पर परिवार के प्रत्येक सदस्य उसकी पूरी जिम्मेदारी उठा लेते

थे। जिससे सदस्य और समाज पर कोई बुरा प्रभाव नही पड़ता था। प्राचीन परिवारों में वृद्धजनों के संचित अनुभव के द्वारा व्यक्ति अपने विकास मार्ग को बाधा रहित करते थे उनको गुरू तुल्य मानकर सर्वाधिक सम्मान दिये जाने की संस्कृति रही है। परन्तु आधुनिक जीवनशैली मे वृद्धों की भावनाओं को समझने का समय युवाओं के पास नही होता, वृद्धजन भावनात्मक और नातेदारी सम्बन्धों को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं जबकि युवा तार्किक और मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को अधिक महत्व देने के पक्ष में है।

इसी प्रकार आधुनिकीकरण के तहत तरह–तरह के जो शैक्षिक संस्थान प्रकाश मे आयें है उनमें शिक्षा ग्रहण कर नवयुवकों को जब योग्य अजीविका साधन नहीं प्राप्त होता है तो उनके अन्दर कुन्ठा और निराशा प्राप्त हो जाती है फलस्वरूप वे गलत दिशा की तरफ कदम बढानें में संकोच नही करते। संचार साधनों के गाँव–गाँव पहुँचने से जहाँ उन्होंने एक तरफ विकास में सहयोग दिया है वहीं दूसरी तरफ इसका नकारात्मक पहलू भी दिखाई देता है। अधकचरे ज्ञान ने युवक–युवतियों को दिशा भ्रमित कर दिया है। वे अपने आदर्श एवं मूल्यों को भूलकर आधुनिकीकरण के प्रभाव में अनुचित वेशभूषा को धारण कर अपनी संस्कृति का उपहास उड़ाते है। उनके अन्दर मानवीय संवेदना, समानता, बुजुर्गो का सम्मान इत्यादि भाव लुप्तप्राय हो गये हैं। व्यक्ति अपने स्वार्थ में ही लीन होता जा रहा है समाज परिवार पड़ोस उसके लिए उतने महत्वपूर्ण नही रह गयें हैं। उनमें बढ़ती आकांक्षाओं के कारण तीव्र सामाजिक असंतोष फैल रहा है।

आज भारत में आधुनिकता की जो प्रक्रिया चल रही है उसमें गुणात्मकता को और बढ़ाने की आवश्यकता है। अपनी भारतीय परम्परागत संरचना मे बदलाव ला कर उसको अधिक तर्कवादी बनाने की जरूरत है परन्तु इस बात का विशेष ध्यान रखते हुए यह परिवर्तन होना चाहिए कि हमारी जो परम्परागत विशेषता है उसका विखण्डन न होने पाये क्योंकि परम्परा अपने में जो मूल्य, आदर्श, ज्ञान समेटे है वह अमूल्य है। अतः आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में भारतीय समाज के लोग विषय विशेषज्ञता

हासिल करने के साथ ही अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं सभ्यता के संदर्भ की दृष्टि से सोच कर अपने ज्ञान का प्रयोग करें तो व्यक्ति राष्ट्र दोनो की प्रगति निश्चित है ।

संदर्भ –

1. प्रभु, पी.एच. – हिन्दू सोशल ऑर्गेनाइजेशन, द पापुलर बुक डिपार्टमेन्ट बम्बई 1954
2. श्रीनिवास एम0 एन0 – सोशल चेंज इन मॉर्डन इण्डिया – 1977
3. देसाई0 आई0 पी0 – सम ऑस्पेक्ट्स ऑफ फैमिली इन महुवा – एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई 1964
4. कुमार राकेश – नारीवादी विमर्श – आधार प्रकाशन – 2002
5. कपाडिया, के0 एम0 – मैरिज एण्ड फैमिली इन इण्डिया – ऑक्सफोर्ड यूनिवसिटी प्रेस, बम्बई 1966
6. सिंह, योगेन्द्र – एस्से ऑन मार्डेनाइजेशन इन इण्डिया – 1978
7. अहूजा, राम – सामाजिक समस्यांए – 2000
8. योजना – दिसम्बर 2009
9. हिन्दुस्तान – 24 सितम्बर 2011